अमर उजाला

प्रवाह

नई दिल्ली । बृहस्पतिवार, 16 मई 2019

निर्भीक पत्रकारिता का आठवां दशक
स्थापना वर्ष : 1948

विश्वास वास्तविकता से अलग नहीं करता, बल्कि यह आपको वास्तविकता से जोड़ता है।
-पाउलो कोएलो

ब्राजील के उपन्यासकार

पश्चिम बंगाल में राजनीतिक हिंसा इस चरम पर पहुंच गई है कि चुनाव आयोग को वहां प्रचार की अवधि घटाने के साथ शीर्ष प्रशासनिक अधिकारियों को हटाने जैसा कदम उठाना पड़ा है।

बेकाबू बंगाल

पश्चिम बंगाल में हर चरण में हुई हिंसा वहां राजनीति के हिंसक चरित्र को तो बताती ही है, लेकिन आखिरी चरण से पहले भाजपा अध्यक्ष अमित शाह के रोड शो में हुई भीषण हिंसा और 19वीं सदी के प्रख्यात समाज सुधारक ईश्वरचंद्र विद्यासागर की मूर्ति तोड़े जाने की घटना दुर्भाग्यपूर्ण होने के साथ-साथ घोर निंदनीय भी है। स्थिति यहां तक पहुंच गई है कि चुनाव आयोग को वहां हस्तक्षेप कर चुनाव प्रचार में तय अवधि से चौबीस घंटे की कटौती करने के साथ-साथ राज्य के प्रधान सचिव गृह और एडीजी-सीआईडी को तत्काल प्रभाव से हटा देना पड़ा है, जो मुख्यमंत्री ममता बनर्जी के लिए बड़ा झटका है। हालांकि इससे पहले विद्यासागर की मूर्ति तोड़ने को आधार बनाकर न केवल तृणमूल ने, बल्कि माकपा ने भी विरोध प्रदर्शन किया। स्त्री शिक्षा और दूसरे सामाजिक सुधार के लिए विद्यासागर वैसे ही पश्चिम बंगाल में पूजे जाते हैं। तिस पर इसी साल विद्यासागर की दो सौ वीं जयंती है और टेलीविजन पर आ रहे एक बांग्ला धारावाहिक *रानी रासमनि* ने विद्यासागर को इस समय बेहद प्रासंगिक बना दिया है। तृणमूल ने शुरुआत से ही हिंसा के अलावा भाजपा को बाहरी बताकर तथा उसके नेताओं की रैलियां रोककर अपनी हताशा का सुबूत दिया। यहां तक कि ममता का मीम बनाने की सजा भाजपा से जुड़ी एक लड़की को जिस तरह मिली, कम से कम एक लोकतंत्र में उसकी उम्मीद नहीं की जा सकती। अमित शाह के रोड शो में हुई हिंसा भी ममता सरकार की निष्क्रियता का ही प्रमाण है। इस रोड शो में दोनों तरफ से हिंसा होने की पूर्वसूचना पुलिस को थी, इसके बावजूद पुलिस की पर्याप्त मौजूदगी नहीं थी। बेहद संवेदनशील माने जाने वाले विद्यासागर कॉलेज में पुलिस की उपस्थिति तो दूर, तृणमूल छात्र परिषद के युवा कॉलेज के भीतर से शाह के काफिले पर पत्थर, बोतल और डंडे फेंक रहे थे। अलबत्ता भाजपा ने भी वहां वैसी ही जवाबी हिंसा का परिचय दिया है। बल्कि अभी तक चुनाव आयोग को विपक्ष के हमले से बचाती भाजपा के अध्यक्ष ने निष्क्रियता के लिए आयोग की जिस तरह आलोचना की, वह भाजपा की हताशा के बारे में ही बताता है। पश्चिम बंगाल का चुनावी नतीजा चाहे जो हो, लेकिन यह शीशे की तरह साफ है कि इस राज्य को राजनीतिक हिंसा की कुसंस्कृति से मुक्त करने की लड़ाई अभी बहुत लंबी है।

ईरान से रिश्ते में अमेरिका का रोड़ा

चार तेल टैंकरों पर हमले के बाद खाड़ी क्षेत्र में तनाव बढ़ गया है। अमेरिका और उसके करीबी सहयोगी सऊदी अरब ने इन हमलों के लिए ईरान को जिम्मेदार ठहराया है। उनका आरोप है कि ये हमले खाड़ी क्षेत्र में कच्चे तेल की आपूर्ति सुरक्षा को कमजोर करते हैं। दूसरी ओर भारत का समर्थन प्राप्त करने के लिए ईरान के विदेश मंत्री जावाद जरीफ नई दिल्ली के दौर पर हैं, क्योंकि अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रंप ने ईरान पर प्रतिबंध और कड़े करने का फैसला किया है। इस घटनाक्रम ने भारत के लिए एक महत्वपूर्ण रणनीतिक चुनौती पेश कर दी है, जिसका एक तरफ अमेरिका, सऊदी अरब और संयुक्त अरब अमीरात के साथ बेहतर संबंध है, तो दूसरी तरफ ईरान से भी। इस प्रकार खाड़ी में तनाव के इस नवीनतम दौर में भारत का बहुत कुछ दांव पर है, जो कच्चे तेल की आपूर्ति से परे है। इसका संबंध भारत की रणनीतिक स्वायत्तता और विदेश नीति के विकल्पों से भी है। भारत की तरफ से ईरान के विदेश मंत्री को फिलहाल भरोसा दिलाया गया है कि तेल खरीदने का फैसला चुनाव के बाद लिया जाएगा।

ईरान के साथ भारत का रिश्ता सदियों पुराना है, लेकिन अमेरिका के लिए वह कोई मायने नहीं रखता है। सबसे महत्वपूर्ण बात है कि चीन के बाद भारत ईरान के कच्चे तेल का दूसरा सबसे बड़ा खरीदार है। इस प्रकार भारत समेत आठ देशों को तेल आयात की छूट खत्म करने के ट्रंप के फैसले से भारत के तेल आयात और घरेलू बाजार में तेल की कीमतों पर असर पड़ना निश्चित है। भले ही अधिकारियों ने पुष्टि कर दी है कि भारत अब ईरान से कच्चे तेल का आयात बंद कर देगा और नई दिल्ली को उम्मीद है कि सऊदी अरब और अन्य ओपेक देश ईरान से होने वाले आयात की भरपाई कर देंगे, लेकिन जमीनी स्तर पर कठोर वास्तविकता अलग हो सकती है।

भारत के पास ईरान के साथ अपने गैर-डॉलर आधारित व्यापार को जारी रखने या अन्य स्रोतों से 'भारतीय रिफाइनरियों को कच्चे तेल की पर्याप्त आपूर्ति करने के लिए एक मजबूत योजना' चुनने का विकल्प है।

मारूफ रजा, सामरिक विश्लेषक

पिछले वर्ष 22 अक्तूबर को सऊदी अरब के ऊर्जा मंत्री खालिद अल-फलिह ने कहा था कि उनका देश अतिरिक्त उत्पादन करके ईरान से निर्यात होने वाले तीस लाख बैरल तेल की क्षतिपूर्ति नहीं कर पाएगा। इस तरह कच्चे तेल की कीमत में बड़ा उछाल आने की आशंका है, जिसकी मौजूदा कीमत 75 डॉलर प्रति बैरल है। इससे पहले 2014 में कच्चे तेल की कीमत सौ डॉलर प्रति बैरल के उच्च स्तर पर थी। इससे निश्चित रूप से अमेरिकी तेल कंपनियां खुश होंगी, जिन्होंने वर्ष 2016 में 27 डॉलर प्रति बैरल कच्चे तेल की कीमत को बढ़ाने के लिए ट्रंप प्रशासन के साथ तगड़ी पैरवी की थी, क्योंकि उन्हें करीब 3,35,000 नौकरियों का नुकसान उठाना पड़ा था।

अमेरिकी तेल कंपनियों को फायदा कराने के अलावा ट्रंप का उद्देश्य ईरान की अर्थव्यवस्था को अलग-थलग और ध्वस्त करना भी है, ताकि वह अपने कट्टरपंथी घरेलू मतदाताओं को खुश कर सकें, क्योंकि अमेरिका में ईरान को एक ऐसे दुश्मन के रूप में देखा जाता है, जिसे 1979 में तेहरान में अमेरिकी दूतावास पर हमला करने के लिए अवश्य दंडित किया जाना चाहिए, जब अमेरिका के मुख्य सहयोगी ईरान के शाह को हटा दिया गया था, क्योंकि क्रांति के बाद कट्टरपंथी अयातुल्लाह सत्ता में आए थे। तब से ईरानियों ने इस्लामी दुनिया में सऊदी शासन के प्रभुत्व को एक चुनौती पेश की है और अमेरिका तथा उसके मुख्य क्षेत्रीय सहयोगी इस्राइल के लिए रणनीतिक चुनौती बढ़ा दी है। राष्ट्रपति ट्रंप अपने संकीर्ण एजेंडे पर काम कर रहे हैं, जिसे कहीं भी समर्थन नहीं मिल रहा है।

यूरोपीय संघ, खासकर ब्रिटेन, फ्रांस और जर्मनी स्पष्ट रूप से ट्रंप प्रशासन के कामकाज के तरीकों से चिंतित है, जो कट्टरपंथियों के साथ काम कर रहा है। इन देशों ने अमेरिका से किसी भी तरह के तनाव को और नहीं बढ़ाने की अपील की है। वास्तव में ब्रिटेन ने यहां तक चेतावनी दी है कि अगर ईरान को और अलग-थलग किया गया और उसने होर्मुज जलडमरूमध्य को अवरुद्ध करने का फैसला किया, तो खाड़ी क्षेत्र में संघर्ष का खतरा है, जहां से वैश्विक तेल की जरूरत का पांचवां हिस्सा गुजरता है। अमेरिका ने पहले ही खाड़ी क्षेत्र में एक विमान वाहक समूह (जमीनी हमलों के लिए समुद्र में सचल नौसेना बेस) तैनात कर दिया है। अमेरिका की गंभीरता को दिखाने के लिए उसके एफ-15, एफ-35 लड़ाकू जेट और बी-52 बॉम्बर्स ने हवाई गश्त शुरू कर दी है।

लेकिन ईरानियों के आसानी से झुकने की संभावना नहीं है। वे बीते चार दशकों से लगातार अमेरिकी दबाव में हैं और उनकी पीढ़ियां अलगाव और प्रतिबंधों के साथ जी रही हैं। और अब यूरोपीय संघ के देशों, जिन्होंने साथ मिलकर ईरान के साथ बहुराष्ट्रीय परमाणु समझौता तैयार किया था और जिसे अब अमेरिका ने वापस ले लिया है, और रूस व चीन ने उन देशों और उनकी संस्थाओं के खिलाफ अमेरिकी प्रतिबंधों की अनदेखी शुरू कर दी है, जो ईरान के साथ व्यवसाय जारी रखेंगे।

इसका एक कारण यह है कि अमेरिका को भरोसा है कि ईरान को आर्थिक रूप से दंडित करने के उसके प्रयास सफल होंगे (भले ही तेहरान ने परमाणु समझौते (जेसीपीओए) की आवश्यकताओं का अनुपालन किया हो) क्योंकि अमेरिका बैंकों और कॉरपोरेट संस्थाओं द्वारा उपयोग किए जाने वाले वैश्विक वित्तीय संदेश प्रणाली (एसडब्ल्यूआईएफटी) को नियंत्रित करता है। हालांकि, जेसीपीओए पर हस्ताक्षर करने वाले यूरोपीय देशों (ब्रिटेन, फ्रांस और जर्मनी) ने अब अपनी कंपनियों को अमेरिकी डॉलर आधारित बैंकिंग प्रणाली से बाहर ईरान के साथ व्यापार करने में सक्षम बनाने के लिए एक विकल्प (आईएनएसटीईएक्स) बनाया है।

इसलिए भारत के पास ईरान के साथ अपने गैर-डॉलर आधारित व्यापार को जारी रखने या अन्य स्रोतों से 'भारतीय रिफाइनरियों को कच्चे तेल की पर्याप्त आपूर्ति करने के लिए एक मजबूत योजना' चुनने का विकल्प है, जैसा कि मोदी सरकार के तेल मंत्री धर्मेंद्र प्रधान ने आश्वस्त किया। इस बात की संभावना है कि भारत इस बाद के विकल्प को चुनेगा, क्योंकि नई दिल्ली अफ्रीका और लैटिन अमेरिका में अन्य देशों से कच्चे तेल प्राप्त करने की योजना बना रही है, हालांकि यह ईरान से आयातित तेल से महंगा होगा, जो भारत का सबसे निकटतम आपूर्तिकर्ता है और भारत को 60 दिन की क्रेडिट लाइन देता है। लेकिन यह वह कीमत है, जो हमें चुकानी है, क्योंकि भारत अमेरिका की कूटनीतिक फांस के और करीब होता जा रहा है।

अंतर्ध्वनि

धर्मवीर भारती

डूबते सूरज की सिंदूरी छांह में मैं जैसे नहाकर ताजा हो उठा था

जब आप जिंदगी के भीड़-भाड़ वाले राजमार्ग पर थके-हारे, भीड़ की लहरों में धक्के खाते हुए, विवश आगे ढकेलते जा रहे हों और आपको अकस्मात एक छोटी पगडंडी रास्ते से फूटती दिखाई दे, जो परिचित हरीतिमा को गुदगुदाती हुई किसी अपरिचित ठिकाने को जा रही हो, तो मैं आपसे आग्रह करता हूं कि बिना कुछ भी सोचे-समझे, जल्दी से, तमाम जरूरी काम छोड़कर उस पगडंडी पर मुड़ जाइए। कभी-कभी थोड़ा पलायन बहुत स्वस्थ होता है। इसका अहसास मुझे तब हुआ, जब मैंने अपने को भटकते-भटकते उस चर्च के अहाते में पाया, जब सूरज डूब रहा था। और अकस्मात मीनार पर घंटे बजने लगे और हम दोनों मरियम की मूर्ति के सामने खड़े थे। बड़ी शीतलता थी। नीचे नम धरती पर एक खास तरह की घास जमाई गई थी। और तुम बेहद उदास थीं और मैं चुप और अंदर से भरा-भरा। और बिना कुछ बोले जैसे मैं तुम्हारे मन को टटोल रहा था, और बिना कुछ बोले तुम अपरिचित ममता से मुझे कण-कण भरे दे रही थीं। लगता था जैसे वहां हम मिल रहे हों, एक दूसरे में घुल रहे हों और डूबते सूरज की हलकी सिंदूरी छांह में मैं जैसे नहाकर ताजा हो उठा था...। सच तो यह है कि यह जो कमबख्त साहित्य की जिंदगी है, यह इतनी कृत्रिम है, इतनी बनावटी है, इतनी अस्वाभाविक है कि मन घुटने लगता है। धीरे-धीरे वे क्षण बिल्कुल दुर्लभ हो जाते हैं, जब हम जीवन जीते हैं, गहराई में जीते हैं। अब मैंने सोचा है कि साहित्य की इस सार्वजनिक हलचल को जरा श्रद्धापूर्वक प्रणाम करूंगा। और अपनी जिंदगी फिर पहले जैसी बनाऊंगा...फूल, प्यार और सुख-दुख के गहरे हिलकोरों वाली। खुशनुमा, उज्ज्वल, पवित्र और रंगारंग। पावस की शाम को बादलों में हजारों रंग की फुलझड़ियां खिल आती हैं न...बिल्कुल वैसी ही।

-दिवंगत हिंदी साहित्यकार

मंजिलें और भी हैं

>> गोरेलाल चौधरी

वेतन के दसवें हिस्से से शुरू की थी मुहिम

मैं उत्तर प्रदेश में इटावा जिले के नगला ककरैया (लखना) का रहने वाला हूं। मेरे पिता खेती के साथ ही मुफ्त में आयुर्वेद चिकित्सा भी किया करते थे। बचपन से ही वह मुझे दूसरों का सहयोग करने व सामाजिक कार्यों में बढ़-चढ़कर हिस्सा लेने के लिए प्रेरित करते रहते थे। इटावा से पढ़ाई पूरी करने के बाद आगे की पढ़ाई के लिए मैं लखनऊ आ गया। यहां लखनऊ पॉलीटेक्निक से मैकेनिकल इंजीनियरिंग में डिप्लोमा करने के बाद मेरी नौकरी रेलवे में लग गई। पढ़ाई के दौरान भी मेरे अंदर लोगों का सहयोग करने की भावना मौजूद रही, जिसके कारण मैं कई तरह के जन-जागरूकता कार्यक्रमों में अपनी भागीदारी निभाता रहा।

कुछ समय बाद मेरी तैनाती रेलवे के अनुसंधान, अभिकल्प एवं मानक संगठन के ब्रांच आफिस मुंबई में हुई। वहां जाकर भी मैं लगातार सामाजिक कार्यों में सक्रिय रहा। वहां मेरी मुलाकात अनेक ऐसे युवक-युवतियों से हुई, जो सरकारी नौकरी की तैयारी के लिए पैसे कमाने मुंबई आए थे। पर उच्च शिक्षित होने के बावजूद योग्यता के अनुरूप काम न मिलने पर वे जिल्लत भरी जिंदगी जी रहे थे। यह देखकर मैं द्रवित हो उठा। इसके बाद मैंने अपने वेतन का दसवां हिस्सा बेरोजगार युवाओं को रोजगार दिलाने में खर्च करने का फैसला किया। इस पैसे को मैं कभी उनकी कोचिंग फीस तो कभी प्राइवेट नौकरी के लिए जरूरी प्रशिक्षण पर खर्च करने लगा। इस तरह वहां मैंने कई बेरोजगार युवक-युवतियों को विभिन्न प्राइवेट कंपनियों में नौकरी दिलवाई। एक समय बाद मुझे लगने लगा कि रेलवे की नौकरी और सामाजिक कार्य एक साथ नहीं चल सकते, तो स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति लेकर पूरी तरह बेरोजगार युवाओं की सहायता में लग गया। मेरे रिश्तेदारों व साथ के अधिकारियों ने नौकरी छोड़ने के फैसले को गलत बताया। पर इससे मैं जरा भी विचलित नही हुआ। मैंने ठान लिया कि आगे की जिंदगी समाजिक कार्यों में सहयोग देकर ही बितानी है। इसके बाद मैंने लखनऊ में रहकर ही बेरोजगार युवकों को नौकरी दिलाने में सहयोग करना शुरू किया। इसके लिए मैंने कई प्राइवेट कंपनियों से संपर्क किया, जिन्हें तकनीकी रूप से दक्ष लोगों की आवश्यकता रहती है। इस तरह जो भी बेरोजगार मेरे पास आते हैं, उनका बायोडाटा मैं इन कंपनियों में भेजता हूं, उनका साक्षात्कार करवाता हूं। साथ ही, उन्हें कंपनी की अवश्यकता के मुताबिक नौकरी दिलाने में उपयोगी दक्षता के लिए प्रशिक्षित भी करवाता हूं। इस दौरान कई ऐसे भी बच्चे मेरे पास आने लगे, जो बेहद गरीब परिवारों से थे। वे सरकारी नौकरियों की तैयारी करना चाहते थे। मुझे उनकी पढ़ाई, प्रशिक्षण के साथ रहने-खाने का प्रबंध भी करना था। पहले मैं अपनी पेंशन से उनका खर्च चलाता था, पर बाद में मुझे और रुपयों की जरूरत महसूस होने लगी। इसके लिए मैंने जी.एल.पी. 'स्वरोजगार' चैरिटेबल ट्रस्ट बनाया। जिसका उद्देश्य बेरोजगार युवक-युवतियों को रोजगार दिलाना और स्वरोजगार के अनुकूल प्रशिक्षण दिलाना था। अब तक मेरे प्रयास व सहयोग से लगभग 40 लोग प्राइवेट कंपनियों में नौकरी कर रहे हैं। मुझे लगता है कि वर्तमान भारतीय समाज में बेरोजगारी प्रमुख समस्या है। उच्च शिक्षा प्राप्त करने के बाद भी लाखों की संख्या में युवा रोजगार की तलाश में इधर-उधर भटक रहे है, उन्हें स्वरोजगार हेतु प्रशिक्षित कर रोजगार दिलाने के लिए उचित सहयोग करना मेरा लक्ष्य है।

जरूरतमंद युवाओं को नौकरी में मदद करने के लिए मैंने अपनी नौकरी से स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति ले ली।

हम यह कैसा समाज बना रहे हैं

यह घटना केवल सन्न करने वाली ही नहीं है, हम सबके मुंह पर एक करारा तमाचा है। कानून के राज के नाम पर कलंक है। महिला सुरक्षा के नाम पर बड़ी-बड़ी बात करने वाली सरकारों और पुलिस प्रशासन के लिए डूब मरने का मामला है। उत्तर प्रदेश का सिंगावली क्षेत्र राजधानी दिल्ली से ज्यादा दूर नहीं है। 2009 से अप्रैल 2019 तक एक लड़की दो बार मात्र 10-10 हजार रुपये में बिकी और लगातार बलात्कार का शिकार होती रही, किंतु कोई उसे बचाने वाला नहीं मिला। उसने पुलिस के यहां भी गुहार लगाई, लेकिन कोई राहत नहीं मिली। पुलिस में 10 वर्षों तक प्राथमिकी भी दर्ज नहीं हुई। वहां पहले मायावती की अगुआई वाली बसपा सरकार थी, फिर अखिलेश यादव के नेतृत्व वाली सपा की सरकार थी। पिछले दो वर्षों से वहां योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में भाजपा की सरकार है। हम किसे दोषी कहें? अगर उस लड़की ने बलात्कारियों से तंग आकर खुद को आग के हवाले नहीं किया होता तथा उसका वीडियो सोशल मीडिया पर नहीं आता, तो उसके साथ हुई यौन क्रूरताओं की सच्चाई सामने नहीं आती। यह है, हमारे देश में महिला सुरक्षा की स्थिति। आज वह 75-80 प्रतिशत जली हालत में दिल्ली के एक अस्पताल में जीवन और मौत से जूझ रही है। वह दर्द से कराहते हुए कह रही है, 'काश मैं मर जाती। कोई भी इस तरह के जख्मों को नहीं झेलना चाहता। लेकिन, अब जबकि मैं जल चुकी हूं, तो लोग कम से कम मेरा रेप तो नहीं करेंगे।'आखिर किस मानसिक स्थिति में ऐसा वक्तव्य निकल रहा होगा?

एक दशक के दौरान दो बार उसे बेचा गया। उस लड़की ने बलात्कारियों से तंग आकर खुद को आग के हवाले नहीं किया होता तथा उसका वीडियो सोशल मीडिया पर नहीं आता, तो उसके साथ हुई यौन क्रूरताओं की सच्चाई सामने नहीं आती।

अवधेश कुमार

इसके कई पहलू हैं। इसका एक पहलू हमारी सामाजिक संरचना से भी जुड़ा है। 2009 में उसके पिता और चाची ने केवल 14 साल की उम्र में 10 हजार रुपये लेकर एक उम्रदराज व्यक्ति से उसकी शादी कर दी। एक साल में ही रिश्ता टूट गया। इसके बाद पिता और चाची ने एक युवक से 10 हजार रुपये लेकर उसका दोबारा विवाह करा दिया। उसका दूसरा पति उसके पिता का ही दोस्त था। उसके पति ने एक गांव निवासी बाबू पुत्र राजवीर से कुछ रुपये उधार लिए थे। रकम नहीं चुकाने पर बाबू ने उसके साथ कई बार दुष्कर्म किया। मामले की जानकारी देने पर भी पति खामोश रहा। उसके बाद उसके साथ दुष्कर्म का सिलसिला आरंभ हो गया।

जरा सोचिए, जब 14 वर्ष की उम्र में 10 हजार रुपये लेकर उम्रदराज व्यक्ति से उसकी शादी की जा रही थी, तो समाज के किसी व्यक्ति ने इसका विरोध क्यों नहीं किया? जबकि पूरे गांव को मालूम था कि क्या हो रहा है। उसे एक युवक भी मिल गया, जिसने उसकी कथा जानकर उसका साथ देने की कोशिश की। उसने मुरादाबाद में एक किराये के कमरे में उसे रख दिया। किंतु यहां भी बलात्कारी आ धमके। उसने फिर पुलिस से शिकायत की लेकिन कोई असर नहीं। उल्टे पुलिस शिकायत से गुस्साए कुछ बलात्कारी 28 अप्रैल, 2019 को उसके घर पहुंचे और तेजाब डालने व जान से मारने की धमकी दी। उस समय वह घर पर अकेली थी। उसने हारकर स्वयं को ही आग लगा लिया। कानून के राज में दुष्कर्मी और अपराधी ऐसा दुस्साहस कैसे कर सकते हैं? क्या उनको कानून का कोई भय नहीं? अब जबकि मामला मीडिया में आ गया है, पुलिस सक्रिय हुई है। पूरा मामला एक व्यापक जांच की मांग करती है। दिल दहलाने ओर क्षोभ पैदा करने वाले इस मामले में सबसे बड़ी बात है समाज की चेतना। एक चैतन्यशील और नैतिक समाज कभी भी इस तरह एक लड़की की बिक्री और उसके साथ यौनाचार को होने नहीं दे सकता। ऐसा चैतन्यशील समाज कैसे बने, इसके लिए हम सबको प्रयास करना होगा।

हरियाली और रास्ता

किशोर, मैनेजर और सेब

किशोर की कहानी, जिसे हताशा ने आगे बढ़ने का नया रास्ता दिखाया।

मैनेजर ने किशोर से पूछा, क्या तुम कंप्यूटर चलाना जानते हो? किशोर बोला, जानता तो नहीं, पर सीख लूंगा। मैनेजर ने पूछा, क्या तुम्हारा ई-मेल आईडी है? किशोर बोला, नहीं। पर कंप्यूटर सीखकर मैं ई-मेल आईडी भी बना लूंगा। मैनेजर बोला, हमारे पास इतना समय नहीं है। तुम कहीं और नौकरी ढूंढो। किशोर मायूस होकर वहां से निकल गया। वह बारहवीं पास कर चुका था और पढ़ाई में अच्छा था, पर पिता के गुजरने के बाद घर की जिम्मेदारी उसी पर आ गई। कुछ भी करके उसे रात के खाने के पैसे जुटाने थे। पर इस कंपनी में उसे नौकरी नहीं मिली। यहां से निकल वह सेब के एक बगीचे में बैठ गया। उसे कोई विकल्प नहीं दिख रहा था। तभी उसकी नजर सेबों पर पड़ी। उसने कुछ सेब तोड़े, और घर-घर जा उन्हें बेचने लगा। सेब ताजा थे, इसलिए तुरंत बिक गए। उसे करीब सौ रुपये मिले। वह दोबारा बाजार से सेब खरीद लाया, जिसे उसने डेढ़ सौ रुपये में बेचे। शाम तक उसने तीन सौ रुपये कमा लिए। अगले दिन उसने फिर सौ रुपये के सेब से काम शुरू किया और शाम तक छह सौ रुपये कमा लिए। इस तरह उसने सेब का ठेला, फिर दुकान, फिर कई दुकानें खरीद लीं। उसके अपने सेब के बगीचे हो गए और वह बड़ा व्यवसायी बन गया। दस साल बाद वह उसी बगीचे के पास से गुजर रहा था, जहां से उसने अपनी यात्रा शुरू की थी। उसने गाड़ी रुकवाई। बड़ी गाड़ी देखकर बगीचे का मालिक वहां पहुंच गया। उसे लगा, शायद किशोर उसका बगीचा खरीदने आया है। तभी किशोर बोला, मैं आज जो कुछ भी हूं, आपकी वजह से हूं। बगीचे का मालिक हैरान हो गया। फिर किशोर ने अपनी कहानी उन्हें सुनाई। बगीचे का मालिक बोला, अगर कंप्यूटर चलाना आता होता, तो आप आज कहां होते? किशोर बोला, तब शायद मैं आज भी एक ऑफिस बॉय ही होता।

जज्बा हो, तो शून्य से शुरू कर भी शिखर पर पहुंचा जा सकता है।

खुली खिड़की

खतरे में स्तनधारी

दुनिया भर में विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों में 3,434 स्तनधारी प्रजातियों के जीव लुप्तप्राय होने की स्थिति में हैं। एक रिपोर्ट के मुताबिक सबसे ज्यादा खतरे में इंडोनेशिया में रहने वाली प्रजातियां हैं।

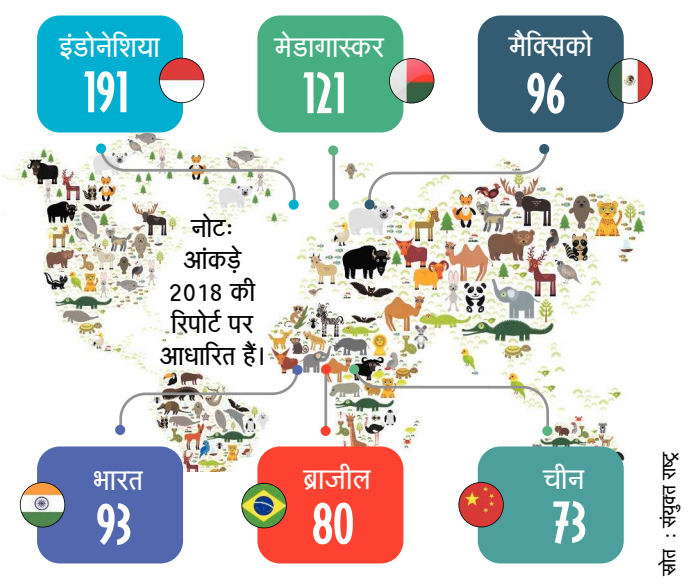

स्रोत : संयुक्त राष्ट्र

मन के हारे हार है

सत्संग

कपिलवस्तु के राजकुमार सिद्धार्थ, जो आगे चलकर गौतम बुद्ध हुए, गृह त्याग कर निकले, तो बोध की खोज में काफी भटके। आखिर उनकी हिम्मत टूटने लगी। उनके मन में यह विचार बार-बार उठने लगा कि क्यों न वापस राजमहल चला जाए। अंत में एक दिन वह कपिलवस्तु की ओर लौट ही पड़े। चलते-चलते राह में उन्हें प्यास लगी। सामने ही एक झील थी। वह उसके किनारे गए, तभी उनकी दृष्टि एक गिलहरी पर पड़ी। उस गिलहरी की चेष्टाओं ने सिद्धार्थ का ध्यान विशेष रूप से आकर्षित किया। वह गिलहरी बार-बार पानी के पास जाती, अपनी पूंछ उसमें डुबोती और उसे निकालकर रेत पर झटक देती। सिद्धार्थ से रहा नहीं गया। वह पूछ ही बैठे, 'नन्ही गिलहरी, तुम यह क्या कर रही हो?' उसने उत्तर दिया, 'इस झील को सुखा रही हूं।' सिद्धार्थ बोले, 'यह काम तो तुमसे कभी नहीं हो पाएगा, भले ही तुम हजार बरस जियो और करोड़ों-अरबों बार अपनी पूंछ पानी में डुबोकर झटको। झील को सुखाना तुम्हारे बस की बात नहीं।' गिलहरी बोली, 'तुम ऐसा मानते हो, पर मैं नहीं मानती। मैं तो यह जानती हूं कि मन में जिस कार्य को करने का निश्चय किया, उस पर अटल रहने से वह हो ही जाता है। मैं तो अपना काम करती रहूंगी।' यह बोलकर वह अपनी पूंछ को डुबोने के लिए झील की ओर चल पड़ी। गिलहरी की बात सिद्धार्थ के हृदय में बैठ गई। वह वापस लौटे और फिर तप में रत हो गए।

-संकलित